DESALITE NEWSLETTER

sancharan

March 2019 | Newsletter by the Department of Hindi | SFS / Hindi 01 / Mar 2019

"क्षमा करने वाला अपने सारे काम स्वयं व आसानी से कर लेता है |
आचार्य चाणकय

"सफलता मे दोषो को मिटाने की अद्भुत शक्ति होती है |
मुंशी प्रेमचंद

"शिक्षा का परिणाम एक मुक्त रचनात्मक व्यक्ति होना चाहिए जो एतिहासिक परिस्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध लड़ सके|
सर्वपल्ली राधाकृष्णन

INSIDE THIS ISSUE:

"भाषाओं के प्रति मेरे	1
मीडिया एक उत्तरदायित्व	2
सामाजिक कूरीतियां	2
डिअर ज़िंदगी - फिल्म समीक्षा	3
नारी एवं शिक्षा	4
दिल का कहना	4

"भाषाओं के प्रति मेरे विचार"

भाषा का हमारे जीवन में बहुत महत्व हैं।भाषा एक माध्यम होता है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं,साथ ही यह हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को भी दिखाता है।मनुष्य भाषा को अपनी आवश्यकता पड़ने पर ही सीखने की कोशिश करता हैं ।भारत को विविधता में एकता का देश कहा जाता है क्योंकि भाषा,संस्कृति एवं धर्म में इतनी विविधता के बावजूद लोग एकता के साथ रहते हैं। विश्व भर में कई प्रकार की भाषाएं बोली जाती है और सभी देश अपने-अपने देश की भाषा का विकास करने में लगे हैं ।हमें प्रत्येक भाषा का सम्मान करना चाहिए।एक भाषा का विकास करने के लिए दूसरी भाषा का दमन करना भी बिल्कुल गलत है।एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखना बहुत ही अच्छी बात है क्योंकि एक से अधिक भाषा सीखने वाले व्यक्ति का मानसिक विकास तो होता ही है साथ ही उसकी सोच भी रचनात्मक होती हैं ।लेकिन देश का दुर्भाग्य है कि व्यक्ति अपने ही देश की भाषाओं को नहीं सीखना चाहता।

हमारे देश में कई प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं जिनमें से कई भाषाएं लुप्त होने की कगार पर हैं।हमें इस बात को भी समझना होगा कि हमारी भाषा ही समाप्त नहीं हो रही बल्कि इसके साथ हमारी संस्कृति भी समाप्त हो रही है क्योंकि संस्कृतियों को भाषाओं के जरिए ही सुरक्षित किया जा सकता है। आज देश में उपस्थित कई उपद्रवी तत्व हमारी भाषा,धर्म एवं संस्कृति के नाम पर आक्रोश उत्पन्न कर के देश की अखंडता को तोड़ रहे हैं।

आज जहां अन्य देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं वही हम भाषा धर्म एवं संस्कृति के नाम पर आपस में लड़ रहे हैं।जितनी उत्सुकता हम अन्य देशों की भाषाओं को सीखने में दिखा रहे हैं क्या हम उतनी ही उत्सुकता अपने देश की भाषाओं को सीखने में नहीं दिखा सकते?जब हम अपने देश की भाषाओं को सीखेंगे तभी हम अपने देश की संस्कृति को भी समझ पाएंगे।भाषा हमेशा भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति,सभ्यता एवं संप्रदायों को जोड़ने का कार्य करती है अर्थात् भाषा लोगों को एकजुट करती है ।

आज देश का नागरिक भाषा,संस्कृति एवं सभ्यता के नाम पर आपस मे लड रहा है इसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं क्योंकि हम भारतीयों ने कभी भी अपनी भाषा संस्कृति और सभ्यता को सीखने और समझने की कोशिश ही नहीं की।हमे इस बात को समझना होगा कि हमें अपने देश की अखंडता को और अधिक मजबूत करने के लिए देश की संपूर्ण भाषाओं एवं संस्कृतियों का सम्मान करना होगा और साथ ही इन्हें सीखने और समझने की कोशिश करनी होगी

धर्मराज भट्ट
बी०सी०ए तृतीय सेमेस्टर

मीडिया एक उत्तरदायित्व

मीडिया संचार माध्यम का एक आवश्यक अंग है।कोई भी संदेश, संचार माध्यम से समाज तक पहुंचाया जा सकता है।इसलिए इसका सही रूप से उपयोग होना आवश्यक है।कुछ लोग अपने फायदे के लिए इसका अनुचित उपयोग करते हैं।इससे समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है।नई पीढ़ी को दिशाभ्रम होता है। समाज टूटता है।मीडिया का उत्तरदायित्व है कि जिम्मेदारी से इसका उपयोग करें।सही संदेश सही तरीके से प्रस्तुत करें।लोगों को जागरूक रखें। असामाजिक तत्वों से अवगत कराएं ।समाज की प्रगति में योगदान दें।समाज की प्रगति देश की प्रगति है। देश की प्रगति से हमारी प्रगति होती है।

यह कबीर दास जी का दोहा हमें वाणी के महत्व से परिचय कराता है ।वह कहते हैं हमारी वाणी ऐसी हो जो किसी को पीड़ा ना दे। शब्दों के चयन से रिश्ते बनते व बिगड़ते हैं ।शारीरिक घाव कुछ समय में ठीक हो जाते हैं किंतु शब्दों के तीर से घायल व्यक्ति का घाव नासूर बन सकता है।उन शब्दों व वाणी को याद कर-कर व्यक्ति नफरत से गिर जाता है। कभी न कभी वहा आप पर वार करता है। इस तरह बात बिगड़ती जाती है। समय रहते इन परिस्थितियों को अपनी मधुर वाणी से संभाल लेना चाहिए।इसलिए वार्तालाप में शब्दों का चयन व वाणी का उपयोग सही तरीके से करने से श्रोता शब्दों के अर्थ पर ध्यान देता है। क्रोध में भी ऐसी वाणी का प्रयोग न करे ,जो रिश्ते तोड़ दे ।मधुर वाणी से रिश्ते जुड़ते हैं। आप उपयुक्त शब्दों से अपनी बात कहें ,तो आप भी प्रसन्न रहेंगे और आप को सुनने वाला भी।

सामाजिक कूरीतियां

हमारा देश कहने को तो बहुत तरक्की कर रहा है लेकिन हमारे इसी देश में कुछ रीति-रिवाज़ और परंपराएँ ऐसी हैं जो इस देश की तरक्की में बाधा डालती हैं, जैसे-: पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, बाल-विवाह, जाति, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव करना आदि। और इनमें से ज्यादातर कुरीतियां महिला वर्ग के लिए ही ज्यादा कष्टदायी होती हैं तो इन्हीं कूरीतियों का बयान मैं आपके सामने कर रहा हूँ ।

सबसे पहले पर्दा प्रथा का जिक्र करते हैं जो औरतो के लिए सबसे ज्यादा दुखद होता है।यह एक ऐसी परंपरा है जिसमें औरतों को अपने पति से बड़े या फिर अनजान लोगो से अपना चेहरा ढकना होता है।इस तरह की परंपराएँ ज्यादा उत्तरी भारत के हिस्सों में देखने को मिलती हैं जैसे :- हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि। इस तरह की परंपराओं को कुछ रूढ़िवादी लोग संस्कृति या संस्कार का नाम भी देते हैं।जब कोई पिता अपनी बेटी को शादी करके उसके ससुराल भेजता है तो यही आशा करता है कि उसकी बेटी को किसी बात की कोई भी तकलीफ ना हो, तो फिर वही पिता अपनी पुत्रवधू को क्यों घूंघट में घुटने पर मजबूर करता है आखिर वह भी तो उसकी बेटी समान होती है।यह परेशानी सिर्फ शादीशुदा औरतों के साथ ही नही है बल्कि इस्लामी धर्म में तो छोटी-छोटी बच्चीयों को भी प्रदे में रखा जाता है जो बुरखे के नाम से जाना जाता है और उनके पहनावे का एक हिस्सा है।

दहेज प्रथा एक और सबसे बुरी प्रथा है जिसमें शादी के दौरान वधू पक्ष की तरफ से वर पक्ष को कुछ कीमती सामान या कुछ धनराशि भेंट में दी जाती है जिसे लोग शादी का ही एक हिस्सा मानते हैं और यहाँ तक की कुछ सीमित बद्ध सोच वाले लोग शादी के दौरान दहेज ना मिलने पर शादी तोड़ भी देते हैं । कुछ लोग तो शादी के बाद दहेज के लिए लड़की को अलग-अलग तरह से परेशान करते हैं ।इतना ही नहीं दहेज के लिए लड़की के साथ मारपीट करना, घर से निकाल देना, यहाँ तक की जान से मार देना जैसे बहुत से दिल दहला देने वाले आपराधिक मामले आज भी देखने को मिलते हैं ।

बाल विवाह भी एक बहुत गंभीर बीमारी की तरह है जिसमें बहुत ही छोटी उम्र में शादी कर दी जाती है, समझ के अभाव में बच्चे भी शादी करने के लिए तैयार हो जाते हैं, जो बच्चे अभी खुद को और दुनियादारी को समझने में सक्षम नहीं होते उन्हें शादी जैसे बंधन में बांध दिया जाता है। खेलने-कूदने, खाने-पीने और पढ़ने-लिखने की उम्र में उन पर घर-गृहस्थी का बोझ डाल दिया जाता है। इस स्थिति में न केवल लड़कियों को बल्कि लड़कों को भी बहुत विकट परिस्थिति से गुजरना पड़ता है। एक तरफ लड़कियाँ घर-परिवार की जरूरतें पूरा करने और अन्य घरेलू कार्य करने में सक्षम नहीं होती वहीं दूसरी तरफ लड़के भी घर चलाने के लिए पैसे जुटाने में असमर्थ होते हैं और इस तरह दोनों का जीवन अंधकार में डूबने लगता है न केवल इतना ही बल्कि कई बार तो जो लड़कियाँ खुद को संभालने की स्थिति में नहीं होती उनको माँ बनकर अपने बच्चों को संभालना पड़ता है। कम उम्र में शादी होने के कारण बहुत से बच्चे बचपन में मिलने वाली हर खुशी से वंचित रह जाते हैं।

जहां एक तरफ अपने देश को विविधताओं का देश कहा जाता है जहां अनेक जाति और धर्म के लोग रहते हैं, वहीं दूसरी तरफ जाति, धर्म और लिंग के आधार पर होने वाला भेदभाव अपने देश की बहुत बड़ी समस्या है। जहां अपने देश में विभिन्न जातियाँ और धर्म हैं वहीं इनमें बहुत भेदभाव भी होता है। ग्रामीण इलाकों में तो जातिवाद को लेकर बहुत ही गलत

धारणाएँ है। क्षुद्र जाति वालो को किसी भी अन्य जातियों के साथ उठने-बैठने और खाने-पीने को भी नहीं दिया जाता और शादी के लिए भी लड़का और लड़की दोनों का एक ही जाति का होना आवश्यक कहा जाता है, जबकि ऐसा कुछ नही होता।और जब हम धर्म की बात करते हैं तो हर धर्म के लोग इंसानियत को भूलकर सिर्फ अपने धर्म को ही प्राथमिकता देते हैं और धर्म के नाम लड़ाई -झगड़ा करते रहते हैं। जैसे कि अभी अयोध्या में राम मंदिर बनाया जाये या बाबरी मस्जिद, इस बात को लेकर बहुत बड़ा विवाद चल रहा है। इस तरह के और भी बहुत से धार्मिक विवाद हैं जिनमें साफ साफ धार्मिक विवाद नजर आता है। भेदभाव सिर्फ धार्मिक या जातिवाद में ही नहीं है बल्कि हर घर में एक भेदभाव और होता है जो बच्चों के लिंग को लेकर होता है। हर घर में लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा ज्यादा प्राथमिकता दी जाती है तथा उन्हें लड़कियों की अपेक्षा ज्यादा छूट भी मिलती है, इतना ही नहीं हर क्षेत्र के लिए लड़कियों की सीमाएँ सीमित कर दी जाती हैं । लड़कियों की सीमा घर की चारदिवारी के अंदर तक सीमित होती है। उन्हें ज्यादा शिक्षा भी नहीं दिलाई जाती। इस तरह का भेदभाव लगभग हर घर में देखने को मिलता है, पता नहीं क्यूँ लड़कियों को इस तरह की घूटन भरी जिन्दगी जीने पर मजबूर किया जाता है? क्यूँ उन्हें लड़कों के समान अधिकार नहीं दिए जाते? क्यों हम कभी इसके बारे में नहीं सोचते?

सरकार ने इन बुराइयों को खत्म करने के लिए बहुत से कानून भी लागू किए हैं लेकिन सिर्फ कानून इन बुराइयों को खत्म नहीं कर सकते हर व्यक्ति को इसके बारे में सोच विचार करना होगा और अपना हर संभव योगदान समाज को देना होगा ताकि हम जल्द से जल्द इन बुराइयों को खत्म कर सकें । मुझे उस दिन का इंतजार है जब हमारा देश इन सब बुराइयों से मुक्त हो जाएगा ।

सोमेश कुमार
5th सेमेस्टर
बी.कॉम, "बी"

डिअर ज़िंदगी - फिल्म समीक्षा

कायरा (आलिया भट्ट) विदेश से सिनेमटॉग्रफी का कोर्स करने के बाद अब मुंबई में अपने फ्रेंडस के साथ रह रही हैं। कायरा का ड्रीम एक मेगा बजट मल्टिस्टारर फिल्म को विदेश में शूट करने का है, लेकिन इन दिनों वह अपनी टीम के साथ ऐड फिल्में करने के साथ डांस म्यूजिक ऐल्बम को शूट करने में लगी हैं। गोवा में कायरा की फैमिली रहती है, लेकिन कायरा को अपनी फैमिली के साथ वक्त गुजारना जरा भी पसंद नहीं है। कायरा की फैमिली में उसकी मां, पापा के अलावा छोटा भाई भी है, लेकिन बचपन की कुछ कड़वी यादों के चलते कायरा ने अब अपनी फैमिली से कुछ इस कदर दूरियां बना ली है कि अब उसे उनके साथ रहने की बात सुनते ही टेंशन होने लगती हैं। कुछ दिन बाद फिल्म मेकर यजुवेंद्र सिंह (कुणाल कपूर) विदेश में एक फिल्म को शूट करने का ऑफर जब कायरा को देता है तो कायरा को लगता है जैसे उसका ड्रीम अब पूरा होने वाला है। हालात ऐसे बनते हैं कि ऐसा हो नहीं पाता और कायरा अब यजुवेंद्र से दूरियां बना लेती है। इसी बीच गोवा में कायरा के पापा उसे अपने एक दोस्त के न्यूली ओपन हुए होटल के ऐड शूट के लिए गोवा बुलाते हैं। यहां आकर कायरा एक दिन डॉक्टर जहांगीर खान (शाहरुख खान) से मिलती है। डॉक्टर जहांगीर खान शहर का जाना माना मनोचिकित्सक है। कायरा को लगता है कि उसे भी डॉक्टर जहांगीर खान के साथ कुछ सीटिंग करनी चाहिए, इन्हीं सीटिंग के दौरान जहांगीर खान कायरा को जिदंगी जीने का नया नजरिया तलाशने में उसकी मदद करते हैं। कुछ सीटिंग के बाद कायरा डॉक्टर जहांगीर खान उर्फ जग के बताए नजरिए से जब जिंदगी को नए सिरे से जीने की कोशिश करती है तो उसे लगता है सारी खुशियां तो उसके आस-पास ही बिखरी पड़ी हैं।

नारी एवं शिक्षा

किसी भी समाज एवं देश का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब उस समाज या देश में पुरुष एवं महिलाओं में समानता हो और यह तभी संभव है जब देश में महिलाएं शिक्षित होंगी और साथ ही समाज एवं देश महिलाओं के प्रति जागरुक होगा।

जैसा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का भी कहना है -"राष्ट्र हमेशा अपनी महिलाओं द्वारा सशक्त होता है, महिला वह है जो एक नागरिक को एक माता के रूप में, बचपन में एक बहन के रूप में, और बाद में एक पत्नी के रूप में जीवन में पोषण करती है। ये अधिकार प्राप्त नागरिक अंततः एक सशक्त देश बनाते हैं।"

प्राचीन काल से अभी तक किसी न किसी प्रकार से देश की प्रगति में महिलाओं का एक विशेष योगदान रहा है।आज महिलाएं देश के हर क्षेत्र में चाहे वह विज्ञान एवं तकनीकी हो ,चाहे वह राजनीति हो, चाहे खेलकूद हो या सेना हो या किसी भी अन्य क्षेत्र में हो,देश की महिला शक्ति पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर विश्व पटल पर देश का गौरव बढ़ा रही है।

भारत सरकार का महिला एवं बाल विकास मंत्रालय 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'महिला शक्ति केंद्र','स्वाधार गृह', 'उज्ज्वला' आदि कई योजनाएं चला रही है जिन का प्रमुख उद्देश्य देश में महिलाओं के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करना एवं महिलाओं को शिक्षित करने के साथ-साथ उन्हें उनके अधिकारों से अवगत करा कर उनका सशक्तिकरण करना है।

यह बात सत्य है कि देश में महिला साक्षरता के क्षेत्र मे प्रगति हुई है परंतु इस बात को भी हमें समझना होगा कि यह विकास किस स्तर तक हुआ है। आज भी देश में कई ऐसे गांव एवं कस्बे हैं जहां महिलाओं को शिक्षा एवं उनके अधिकारों से वंचित रखा गया है।अतः देश के सर्वांगीण विकास हेतु हम सभी को एकजुट होकर देश में महिला शिक्षा के प्रति लोगों को जागरुक करना होगा क्योंकि "पढ़ेगा इंडिया तभी तो बढ़ेगा इंडिया" ।

धर्मराज भट्ट
बी.सी.ए द्वितिय वर्ष

दिल का कहना

यह जीवन चाहता है तेरा साथ, क्या तु दे पाएगा अपना हाथ,
मत रख दिल पे अपने कोई पहरा,
काश! हर रोज देखने को मिले तेरा चेहरा,
आदत सी हो गई है अब तेरे बिना रहना,
क्या तु सुन सकेगा इस दिल का कहना।।

हमेशा तेरी खुशी चाहता है यह दिल,
तारों सी हो जिन्दगी तेरी, एकदम झिलमिल,
तेरे लिए छोड़ देंगें हम इस दिल का सुनना,
छोड़ देंगें तेरे साथ जीने का सपना बुनना,
क्या तु सुन सकेगा इस दिल का कहना।।

चाहत बहुत सजाई मैनें तेरे संग रहने की,
हिम्मत भी बहुत की अपने दिल की बात कहने की,
नदी के किनारों सा हो गया अपना मिलना,
बंद हो गया इस दिल में अब सपनों का खिलना,
क्या तु सुन सकेगा इस दिल का कहना।।

बहुत कम था जीवन में अपना साथ,
दिल के दिल में रह गई वो सारी बात,
मानकर बैठी थी मैं तुझको अपना गहना,
किस्मत में लिखा था मेरे, अकेले रहना,
क्या तु सुन सकेगा इस दिल का कहना।।

स्वपना शर्मा, सोमेश कुमार
2nd बी.सी.ए ,4th बी.कॉम

sancharan is a Newsletter published from the **Department of Humanities - St. Francis de Sales College, Electronic City, Bengaluru - 560100.** It highlights the activities of the department and serves as a link between the department as well as other colleges.

You are welcome to send your suggestions and feedback to sfsnewsletters@gmail.com

Editorial Board : Fr. Jijo Manjackal, Prof. Lavin,

Design and Layout : Mr. Richie Raju.